ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multidisciplinary e-Journal

Bi-Monthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

The Expression Journal

Impact Factor 3.9

Vol. 3 Issue 6 Dec. 2017

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

चित्रा मुदगल के उपन्यासों में मूल्य बोध

शोधकर्त्री डॉ. मंजू धूड़िया
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान
Mail ID: drmanjudhuriadang@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में चित्रा जी तीन उपन्यासों 'एक जमीन अपनी ', 'आंवा', 'गिलगड्डु' में आये सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, और सांस्कृतिक मूल्यों का विस्तार से वर्णन किया गया है। मूल्य शब्द का विस्तार से वर्णन किया गया है।' एक जमीन अपनी ' में विज्ञापन की दुनियां की परदे के पीछे की वास्तविकता को एवं नारी के सम्मान,शोषण,दुःख,अधिकार,पुरुष की पाशविक प्रवृत्ति,स्त्री का संघर्ष आदि, आंवा में सम्पूर्ण उपन्यास ही नारी अस्मिता की संघर्ष गाथा प्रतीत होता है,और गिलगड्डु में पीढ़ीगत अंतराल,इन तीनों में भारतीय संस्कृति के मूल्यों एवं पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभाव भी प्रस्तुत किये गए हैं। मूल्यों का विघटन एवं बदलते जीवन का विस्तार से वर्णन किया गया है। पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति का अंतर भी प्रस्तुत किया गया है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के मूल्यों एवं साहित्य का सम्बन्ध प्रस्तुत किया गया है।

शब्दकोश

शाश्वत,विघटन,हरिजन, प्रशिक्षण,संयुक्त, एकांकी, उन्मुक्त, विरक्त, उन्माद, वर्जनाहीन, प्रांगण।

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

चित्रा मुदगल के उपन्यासों में मूल्य बोध

शोधकर्त्री डॉ. मंजू धूड़िया
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान
Mail ID: drmanjudhuriadang@gmail.com

::

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध-पत्र में चित्रा जी तीन उपन्यासों 'एक जमीन अपनी', 'आंवा', 'गिलगड्डु' में आये सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विस्तार से वर्णन किया गया है। मूल्य शब्द का विस्तार से वर्णन किया गया है । सबसे पहले मूल्य शब्द का परिभाषित किया गया है,इसकी व्युत्पत्ति एवं विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं का भी शामिल किया गया है एवं विद्वानों की मान्यताओं का भी स्थान दिया गया है। इस थीसिस के अंतर्गत मूल्यों के स्वरूप,महत्व,विकास,अवधारणात्मक परिप्रेक्ष्य बताते हुए यहाँ भी बताया गया है कि मूल्य वस्तुनिष्ठता एवं आत्मनिष्ठता का संतुलन है। मूल्य की मनोवैज्ञानिक अवधारणा भी प्रस्तुत की गई है। थीसिस में आये विभिन्न मूल्य इस प्रकार हैं:

(1) जीवन मूल्य:

इस शोध के अंतर्गत जीवन मूल्यों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया हैं। सर्वप्रथम जीवन मूल्य क्या हैं ? कौनसे हैं ? तथा भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि के अनुसार इनका अंतर भी प्रस्तुत किया गया हैं। जीवन मूल्य का समन्वित सवरूप भी वर्णित किया गया हैं जिसमे सत्यम,शिवम् तथा सुंदरम का सम्मिलित किया गया हैं एवं इस सम्मिलित स्वरूप का ही भारतीय समाज,पाठक वर्ग एवं जगत के लिए कल्याणकारी बताया गया हैं एवं मानवतावादी दृष्टिकोण का ही जीवन मूल्यों का आधार बताया गया हैं गौरतलब हैं कि ईमानदारी,सच्चाई,प्रेम,दया, करुणा,परोपकार आदि शाश्वत मूल्य ही जीवन एवं मानवीयता से पूर्ण एवं सत्यम,शिवम्,सुंदरम को समन्वित करते हैं। जीवन मूल्यों का जीवन में महत्व भी प्रतिपादित किया गया है । महत्त्व के अंतर्गत यहाँ वर्णित है कि जीवन,मूल्य ही संस्कृति,मानवता एवं स्थायित्व को बनाये रखते हैं संस्कृतियों,मानवता के नष्ट होने और विश्व संकट के लिए जीवन मूल्यों का विघटन,ह्रास एवं असंतुलन ही जिम्मेदार है यदि जीवन मूल्यों में स्थायित्व रहेगा तो पारिवारिक,सामाजिक एवं वैश्विक विघटन असंभव होता है। थीसिस के अंतर्गत जीवन मूल्यों का वर्गीकरण भी प्रस्तुत है:

(1) वैयक्तिक मूल्य (जैविक एवं शारीरिक मूल्य)- इसमें मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों को जीवन में क्रियाशीलता का आधार बताया गया है।

(2)समष्टिगत मूल्य - इसमें समष्टि का भाव अर्थात सामाजिकता निहित रहती है।

(3)आध्यात्मिक मूल्य - इसके अंतर्गत जीवात्मा को परमात्मा में विलीन करने का उद्देश्य निहित है।

(4) नैतिक मूल्य - इसके अंतर्गत यहाँ बताया गया है कि सामाजिक आदर्श,सिद्धांन्त एवं मान्यताएँ ही व्यक्तियों में संस्कारों के फलने-फूलने में सहायक होती हैं।

(5) सौंदर्य मूल्य -इनके अंतर्गत सौंदर्य मूल्य का अर्थ एवं परिभाषा को रखा गया है और यह बताया गया है कि कला के संसर्ग से हर वस्तु सूंदर बन जाती है जो आनंद उत्त्पन्न करे वही सौंदर्य है।

जीवन मूल्य और साहित्य

इसमें जीवन मूल्य और साहित्य का सम्बन्ध बताया गया है साहित्यिक मूल्यों कि रचना प्रक्रिया पर जीवन मूल्यों का प्रभाव, जीवन मूल्यों के संक्रमण पर साहित्य प्रदत्त मूल्यों का प्रभाव,साहित्य कि अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा का जीवन मूल्यों के अंकन की दृष्टि से महत्व आदि को प्रतिपादित किया गया है।

चित्रा जी के उपन्यासों में मूल्य निरूपण के आयाम

[1] सामाजिक मूल्य निरूपण के आयाम

इस शोध में चित्रा जी के उपन्यासों में सामाजिक मूल्य निरूपण को विभिन बिंदुओं के माध्यम से दर्शाया गया है: -
(1) संयुक्त परिवार सम्बन्धी मूल्य परंपरा निर्वाह और नई दिशाएं।
(2) नई अर्थ दृष्टि: बदलते पारिवारिक रिश्ते एवंउभरते नए मूल्य।
(3) स्त्री - पुरुष सम्बन्धी मूल्य विघटन,संघर्ष,संक्रमण वनए परंपरागत मूल्यों में दिशाएं।
(4)परंपरागत स्त्री -पुरुष सम्बन्ध मूल्य विघटन।
(5) परंपरागत विवाह पद्धति:मूल्य विघटन।
(6) मातृत्व की भावना:मूल्य निर्वाह ।
(7) नवीन स्त्री -पुरुष सम्बन्ध: समानता का धरातल।
(8) परंपरागत विवाह पद्धति का विरोध:व्यक्ति केंद्रित नई दिशाएँ।
(9)प्रणय एवं यौन सम्बन्ध -बदलते आयाम।
(10) मातृत्व:मूल्य विघटन।
(11) स्त्री-पुरुष सम्बन्ध: मूल्य विघटन।
(12) वर्ण व्यवस्था का विघटन।
(13) शास्वत मूल्यों का विघटन।

[2] चित्रा जी के उपन्यासों में आर्थिक मूल्य

प्रस्तुत शोध में आर्थिक मूल्यों के अंतर्गत यहाँ दर्शाया गया है कि किस प्रकार भेदभाव होता है,इसके अंतर्गत आर्थिक विषमता,स्त्री-पुरुष वेतन भेद,विषयवार वेतनभेद,आर्थिक मजबूरी व यौन शोषण,आर्थिक विषमता एवं पारिवारिक स्तर में भेद,समाज में आर्थिक विषमता एवं वर्ग भेद,वर्तमान पीढ़ी एवं बेरोजगारी,संबंधों में बिखराव, गरीबी एवं शरीर विक्रय।,आर्थिक दबाव व यौन शोषण आदि सब विषमताओं को वर्णित किया गया है जो हमें भारतीय समाज की आर्थिक विषमता के घिनौने स्वरूप का चित्र दिखती है एवं सोचने पर विवश करती है।

[3] प्रस्तुत शोध में राजनीतिक मूल्य

(1) *नीतिविहीन सत्ता*

राजनीति के चलते,समाज में उचित के स्थान पर अनुचित का बोलबाला है जैसे अंग्रेजी भाषा विदेशी होते हुए भी हिंदी भाषा से ज्यादा सम्मान एवं वेतन प्राप्त करती है। इसके अन्तर्निहित ही नीतिविहीन सत्ता का घिनौना रूप हमारे सामने आता है,राजनीतिक विकृतियों के चलते झोंपड़ियों में आग लगाना,लोगों को मौत के घाट उतारना,मासूम बच्चों की जिन्दा चिताएं जलाना,और फिर स्वयं ही अग्नि शमन दस्ते को बुलाना, राजनीति का काला सच सामने लाता है इसी से हमें छल,कपट, दुर्गुणों आदि का पता चलता है।

(2) जाति केंद्रित राजनीति

प्रस्तुत शोध में हमें जाति केंद्रित राजनीति भी देखने को मिलती है जैसे:-अन्तर्जातीय प्रेम को भी धार्मिक कट्टरता का मुद्दा बना दिया जाना और विवाह के समय पर हिन्दू लड़की को मुस्लिमम धर्म ग्रहण करने पर विवश करना और फिर धार्मिक कट्टरता,आग,हिंसा,विद्रोह आदि।

[3] भृष्टाचार

शोध के माध्यम से हम ये जान सकते हैं किआजकल जो समस्या सामाजिक है वह राजनीतिक बन कर रह गयी है और लोग बँटकर जिनने को ही अपनी पहचान मानने लगे हैं और स्वतंत्रता की ललक ने हमें जिस एकता के सूत्र में आबद्ध किया था,उसे उत्तराधिकार की निरंकुशता ने खंड- खंड करके रख दिया है।

[4] शोध के सांस्कृतिक मूल्य

(1) धर्म विषयक मूल्य बोध

शोध के अंतर्गत किसी भी धार्मिक कार्य पर शाश्वत धार्मिक मूल्य दिखाई देते हैं जैसे:-पवित्रता,पति- पत्नी का जोड़े से हवन में बैठना,प्रसाद बाँटना एवं ग्रहण करना,आरती लेना आदि।

(2) राष्ट्रभावना विषयक मूल्य बोध

राष्ट्र एवं राष्ट्रभाषा प्रेमियों द्वारा विदेशी भाषा का विरोध प्रदर्शित हुआ हैअंग्रेजी में काम- काज होना,हिंदी प्रेमियों का विरोध एवं वेतन भेद भी मिलता है।विद्वानों व नेताओं के राष्ट्र भावना विषयक विचार भी मिलते हैं।

(3) सत्यम, शिवम् और सुंदरम

संसार का केंद्र बिंदु एवं समस्त मूल्यों की समावष्टि इन्हीं तीनों के अंतर्गत प्रस्तुत हुयी है ।

(4) नैतिक मूल्य एवं वर्जनाओं का सन्दर्भ

नैतिकता के बदलते मानदंडों को एवं समस्त वर्जनाओं, कुसंगति और विकृतिओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया गया है। विवाहोपरांत भी पुरुष और स्त्री द्वारा कहीं अन्यत्र सम्बन्ध बनाना सामान्य सी बात हो गयी है।

(5) कुंठा, त्रास और संवेदना

वर्तमान भौतिक एवं मशीनीकरण के युग की वास्तविकता भी प्रस्तुत हुयी है जिसमे कुंठा, त्रास,मानसिक तनाव और प्रत्येक संवेदनशील मन का हिस्सा बन गए हैं। एक जमीन अपने,आंवां और गिलगड्डु तीनों में ही लालच,धोखा,झूठ यौन शोषण,अधिकारों का हनन,विवाहेतर पर पुरुष और पर स्त्री से सम्बन्ध, बुजुर्गों का असम्मान,सामजिक और आर्थिकं विषमता,भृष्टाचार, राजनितिक छल,कपट,प्रपंच एवं हैवानियत का काला सच हमारे सामने आता है। नारी के द्वारा भी अस्मिता का संघर्ष और धार्मिक आडम्बरों का विरोध प्रस्तुत हुआ है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः मूल्य मानव जीवन और सभय्ता का आधार है,इनके बिना जीवन,समाज और संसार एक कोरी कल्पना ही बनकर रह जाएगी शोध में इन सभी का अध्ययन करवाया गया है जिसमे मूल्यों का विघटन भी देखने को मिलता है और शाश्वतं मूल्यों का स्थायीत्व भी दिखायी देता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

आधार ग्रन्थ:- एक जमीन अपनी, आंवां, गिलगड्डु।
सहायक ग्रन्थ: (1) - वाल्मीकि रामायण -वासुदेव लक्ष्मी,शास्त्री पणसीकर,(संपादक) 1909 ईस्वी, तृतीया संस्करण, निर्णय सागर प्रेस, बंबई।
(2) मानव मूल्य और साहित्य -धर्मवीर भर्ती, 1960, भारतीय ज्ञान पीठ, वाराणसी।
(3) हिंदी उपन्यास और जीवन मूल्य- डॉ मोहिनी शर्मा, 1986, साहित्यागर, जयपुर।
(4) सामाजिक मनोविज्ञान की रूपरेखा-प्रो रवींद्र नाथ पृ. ६, 1997, किताब महल, दिल्ली।
(5) मूल्य मीमांसा गोविन्द चंद्र पाण्डे, 1993, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
(6) आलोचना के मान -शिवदान सिंह चौहान, 1958, शिवराज प्रकाशन, नयी दिल्ली।
(7) नवीन -गंगा प्रसाद पांडेय, 1954 ।
(8) अनन्तर- देवेंद्र कुमार।
(9) बोध दर्शन - बलदेव उपाध्याय, 1946, शारदा मंदिर बनारस।
(10) कला एवं संस्कृति – डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, 1958, साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग।
(11) हिंदी विश्वकोश - खंड 9